

22-इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण

अध्याय 1: इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण

प्रश्न 1: पिछले तीन सौ वर्षों में भौतिक विज्ञान के विकास के क्या दुष्परिणाम हुए हैं?

उत्तर: पिछले तीन सौ वर्षों में भौतिक विज्ञान का असाधारण विकास तो हुआ है, परन्तु इसका सदुपयोग नहीं हो पाया। इसके कारण वायु और जल प्रदूषण, घातक विकिरण, बढ़ता तापमान, और आणविक अस्त्र-शस्त्र जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं, जिनसे मनुष्य का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। इसी विकास के उन्माद ने दो विश्व युद्ध भी कराए और अनगिनत छोटे-मोटे युद्धों को जन्म दिया।

प्रश्न 2: प्रत्यक्षवादी तत्वदर्शन ने मानवीय आदर्शों को कैसे प्रभावित किया है?

उत्तर: प्रत्यक्षवादी तत्वदर्शन ने आत्मा, परमात्मा, कर्मफल और नैतिकता जैसे मानवीय आदर्शों की गरिमा को कम कर दिया है। इसके प्रभाव से तात्कालिक लाभ ही सब कुछ बन गया है, भले ही इसके लिए धोखा और क्रूरता का सहारा लेना पड़े। यह विचारधारा मनुष्य को एक ऐसे पशु के रूप में प्रस्तुत कर रही है, जिस पर मर्यादाओं का कोई अंकुश नहीं होता।

प्रश्न 3: बढ़ती जनसंख्या भविष्य के लिए एक बड़ी समस्या क्यों है?

उत्तर: जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के कारण भविष्य में खाद्य, निवास, शिक्षा और चिकित्सा जैसी बुनियादी सुविधाओं का प्रबंधन करना बहुत मुश्किल हो जाएगा। सड़कों पर गाड़ियों का चलना तक बंद करना पड़ सकता है। इस जनसंख्या वृद्धि के कारण विकास की कोई भी योजना सफल नहीं हो पाएगी और मनुष्य भूखे भेड़ियों की तरह आपस में ही लड़ने-झगड़ने की स्थिति तक गिर सकता है।

अध्याय 2: सदुपयोग न हो पाने की विडम्बना

प्रश्न 1: प्रगति के नाम पर पाई गई उपलब्धियों का सदुपयोग न होने का क्या परिणाम हुआ है?

उत्तर: यदि प्रगति से मिली उपलब्धियों का सदुपयोग जनकल्याण के लिए होता, तो दुनिया बहुत सुन्दर और विकसित होती। लेकिन समझदार कहलाने वाले लोग भी संकीर्ण स्वार्थ में बंध गए और जो भी मिला उसका दुरुपयोग किया। आज अमीर-गरीब सभी असंतुष्ट हैं और एक-दूसरे का शोषण करने को आतुर हैं, जिससे वे शारीरिक और मानसिक रूप से अस्वस्थ हो गए हैं।

प्रश्न 2: आज के समय में मनुष्य की वास्तविक स्थिति कैसी है?

उत्तर: बाहरी चमक-दमक देखकर प्रगति का भ्रम होता है, परन्तु वास्तव में मनुष्य अपना शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक स्वास्थ्य खो चुका है। वह मरघट के भूतों की तरह डर और चिंताओं के बीच जीवन जी रहा है। आज चारों ओर अनाचार फैला हुआ है और शांति से जीने वाले लोग बहुत कम हैं।

अध्याय 3: आज की सबसे प्रमुख आवश्यकता

प्रश्न 1: आज की सबसे प्रमुख आवश्यकता क्या है और उसे कैसे पूरा किया जा सकता है?

उत्तर: आज की सबसे प्रमुख आवश्यकता विचार क्रांति का व्यापक आयोजन करना है। इसके लिए गलत और अवांछनीय बातों के खिलाफ संघर्ष करना होगा और मानवीय गरिमा के अनुरूप मर्यादाओं का पालन करने के लिए सभी को प्रेरित करना होगा। यही सतयुग की वापसी का एकमात्र उपाय है, जिसे दुनिया भर में लागू किया जाना चाहिए।

प्रश्न 2: विचार क्रांति के लिए किस नीति को अपनाने की आवश्यकता है?

उत्तर: विचार क्रांति के लिए "लोहे से लोहा काटने" और "काँटे से काँटा निकालने" की नीति अपनानी होगी। इसका अर्थ है कि गलत विचारों को खत्म करने के लिए अच्छे विचारों (सद्विचारों) का इतना उत्पादन और वितरण करना होगा कि समाज में शोक और संताप कहीं न मिलें। यह कार्य बहुत बड़ा है, क्योंकि इसमें लगभग ६०० करोड़ लोगों की सोच को बदलने का लक्ष्य है।

अध्याय 4: प्रयोग का शुभारम्भ और विस्तार

प्रश्न 1: विचार क्रांति का शुभारम्भ किसने और कैसे किया?

उत्तर: इस विचार क्रांति का शुभारंभ युग निर्माण मिशन के संस्थापक पूज्य आचार्य जी ने किया। उन्होंने अपनी सारी निजी संपत्ति जनता को सौंप दी और दूसरों को भी लोभ-मोह छोड़कर अपना समय, श्रम और कौशल लोक मंगल के लिए लगाने को प्रोत्साहित किया। उन्होंने पत्रिकाओं और लेखन के माध्यम से लोगों को युग की समस्याओं से जूझने के लिए प्रेरित किया।

प्रश्न 2: युग निर्माण मिशन अपनी विचार क्रांति को विश्वव्यापी बनाने की क्या योजना रखता है?

उत्तर: मिशन "एक से पाँच, पाँच से पच्चीस" के विस्तार तंत्र पर काम करता है। इसके पाँच लाख स्थायी सदस्यों के माध्यम से पच्चीस लाख पाठक जुड़े हैं। प्रत्येक सदस्य को पाँच नए साथी बनाने का कार्य सौंपा गया है। इस प्रकार यह प्रयास कुछ ही समय में करोड़ों लोगों तक पहुँचने की क्षमता रखता है और धीरे-धीरे पूरे विश्व को अपने प्रभाव में ले सकता है।

अध्याय 5: प्रखर प्रेरणा का जीवन्त तंत्र

प्रश्न 1: जनमानस के परिष्कार (सुधार) के लिए मिशन ने किन तीन प्रमुख माध्यमों का उपयोग किया है?

उत्तर: जनमानस के परिष्कार के लिए मिशन ने तीन प्रमुख माध्यमों का उपयोग किया है:

1. **सशक्त लेखनी:** आचार्य जी ने लगभग १५०० पुस्तकें और कई पत्रिकाएँ लिखीं।
2. **सशक्त वाणी:** संगीत और प्रवचन के माध्यम से लोगों को प्रेरित किया गया।
3. **सशक्त व्यक्तित्व:** मिशन के सूत्र संचालक ने अपना आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करके लोगों को प्रेरित किया।

प्रश्न 2: झोला पुस्तकालय और ज्ञान-रथ का क्या उद्देश्य है?

उत्तर: महंगा साहित्य आम लोगों की पहुँच से बाहर है, इसलिए मिशन लगभग लागत मूल्य पर साहित्य प्रकाशित करता है। झोला पुस्तकालय और ज्ञान-रथों के माध्यम से कार्यकर्ता घर-घर जाकर लोगों को युग साहित्य मुफ्त में पढ़ने के लिए देते हैं और बाद में वापस ले आते हैं। इस अनोखे प्रयास से ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाया जाता है।

अध्याय 6: लोक सेवी कार्यकर्ताओं का उत्पादन

प्रश्न 1: युग क्रांति जैसे कार्यों के लिए वेतनभोगी कार्यकर्ताओं की जगह निस्पृह कार्यकर्ता क्यों आवश्यक हैं?

उत्तर: भाव-संवेदनाओं और आदर्शवादिता से जुड़े कार्यों के लिए वेतनभोगी कार्यकर्ता प्रभावी नहीं होते। इसके लिए साधु-ब्राह्मण या वानप्रस्थ स्तर के निस्पृह (बिना स्वार्थ के) कार्यकर्ता चाहिए, क्योंकि तभी वे आम जनता की श्रद्धा और सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे कार्यकर्ता ही लोगों को आदर्शवादी कार्यों के लिए प्रेरित कर पाते हैं।

प्रश्न 2: शान्तिकुञ्ज में 'वानप्रस्थ परम्परा का पुनर्जीवन' कैसे किया गया है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज ने प्राचीन वानप्रस्थ परम्परा को पुनर्जीवित किया है, जिसके तहत लोग अपना जीवन लोकसेवा के लिए समर्पित करते हैं। यहाँ लगभग १५०० उच्च शिक्षित लोग अपनी अच्छी आजीविका छोड़कर समर्पित भाव से रहते हैं और श्रमदान करते हैं। यह आध्यात्मिक साम्यवाद का एक व्यावहारिक उदाहरण है, जहाँ जाति, वंश और लिंग का कोई भेदभाव नहीं है।

अध्याय 7: विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय

प्रश्न 1: शान्तिकुञ्ज का ब्रह्मवर्चस आश्रम क्यों स्थापित किया गया है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज का ब्रह्मवर्चस आश्रम अध्यात्म को विज्ञान के आधार पर प्रस्तुत करने के लिए स्थापित किया गया है। आज का युग बुद्धिवाद का है, जो तर्क, तथ्य और प्रमाण माँगता है। इस आश्रम की आधुनिक प्रयोगशाला में शोध के माध्यम से आदर्शवादी जीवन-दर्शन को नई पीढ़ी के लिए प्रामाणिक सिद्ध करने का कार्य किया जाता है।

प्रश्न 2: ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान में कौन-कौन से प्रमुख शोध कार्य हो रहे हैं?

उत्तर: ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान में कई विषयों पर शोध कार्य चल रहे हैं। इसमें **जड़ी-बूटी विज्ञान** पर शोध का एक विशेष विभाग है, जिसे आयुर्वेद का जीर्णोद्धार कहा जा सकता है। इसके अलावा, एक विभाग मनुष्य की शारीरिक और मानसिक जीवनी-शक्ति को मापने का कार्य करता है, ताकि उसका उपयोग उच्च उद्देश्यों के लिए किया जा सके।

अध्याय 8: घर-घर अलख जगाने की प्रक्रिया दीप यज्ञों के माध्यम से

प्रश्न 1: पुराने यज्ञ आयोजनों में क्या कठिनाइयाँ थीं?

उत्तर: पुराने विधि-विधान वाले यज्ञों में बहुत अधिक पैसा और समय खर्च होता था, तथा ढेरों खाद्य पदार्थ जलते थे। पुरोहितों की बातों को मानना पड़ता था और कई बार इन आयोजनों से संगठन के स्थान पर आपसी मतभेद पैदा हो जाता था। इन कठिनाइयों के कारण आम जनता, विशेषकर श्रद्धावान लोगों की रुचि इनमें कम हो गई थी।

प्रश्न 2: 'दीपयज्ञ' की प्रक्रिया क्या है और यह क्यों प्रभावी है?

उत्तर: 'दीपयज्ञ' एक सरल और कम खर्चीली प्रक्रिया है, जिसमें हर व्यक्ति अपनी थाली में एक दीपक और पाँच अगरबत्ती लेकर आता है। इसमें सामूहिक गायत्री मंत्रोच्चार, संगीत और प्रवचन के माध्यम से लोगों को प्रगतिशील बनने और समाज सुधार के लिए प्रेरित किया जाता है। यह प्रक्रिया सुलभ होने के कारण बहुत प्रभावी है और लाखों लोगों को प्रगति के मार्ग से जोड़ती है।

अध्याय 9: सन्धि बेला एवं इक्कीसवीं सदी का अवतरण

प्रश्न 1: 'युगसन्धि' का क्या अर्थ है और इसका क्या महत्व है?

उत्तर: बीसवीं सदी के अंत (1989) और इक्कीसवीं सदी की शुरुआत (2000) के बीच के बारह वर्षों की अवधि को 'युगसन्धि' माना गया है। यह समय रात्रि के समाप्त होने और दिन के उगने जैसा है। इस अवधि में पिछली गलतियों का प्रायश्चित्त होगा और एक सुखद भविष्य की नींव रखी जाएगी। यह समय परिवर्तन और नवनिर्माण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 2: प्रकृति का 'नियंत्रण और संतुलन' का नियम क्या कहता है?

उत्तर: प्रकृति का नियम है कि वह किसी भी चीज़ की अति सहन नहीं करती। पिछले तीन सौ वर्षों में मनुष्य ने हर क्षेत्र में उदंडता अपनाई है। प्रकृति इस असंतुलन को रोककर शाश्वत अच्छाई और व्यवस्था को फिर से स्थापित करेगी। इक्कीसवीं सदी में अब तक फैली गंदगी की सफाई होगी और एक उज्ज्वल भविष्य का आगमन होगा।

अध्याय 10: भावी सम्भावनाएँ—भविष्य कथन

प्रश्न 1: विश्व के प्रसिद्ध भविष्यवक्ताओं ने इक्कीसवीं सदी के बारे में क्या कहा है?

उत्तर: कई विश्वविख्यात भविष्यवक्ताओं जैसे नेस्ट्राडामस, जीन डिक्सन, और प्रोफेसर हरार ने कहा है कि इक्कीसवीं सदी में मनुष्य की सभी समस्याओं का समाधान होगा। उन्होंने भारत की एक प्रमुख भूमिका होने का उल्लेख किया है, जहाँ से एक नई चेतना का उदय होगा जो पूरे विश्व को प्रभावित करेगी। इसे 'सत्य का युग' (Age of Truth) भी कहा गया है।

प्रश्न 2: "इक्कीसवीं सदी—उज्ज्वल भविष्य" के उद्घोष की आज क्यों आवश्यकता है?

उत्तर: पिछले वर्षों के घटनाक्रमों को देखकर लोगों में भविष्य को लेकर निराशा और डर बैठ गया है, जिससे उनका मनोबल टूट रहा है। जैसे चर्चिल ने युद्ध के समय 'वी फॉर विक्ट्री' का नारा देकर लोगों में उत्साह भरा था, वैसे ही "इक्कीसवीं सदी—उज्ज्वल भविष्य" का उद्घोष लोगों में एक नया सृजनात्मक उत्साह भरेगा और उन्हें बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए प्रेरित करेगा।

अध्याय 11: 21 वीं सदी की आध्यात्मिक गंगोत्री

प्रश्न 1: शान्तिकुञ्ज को 21 वीं सदी की आध्यात्मिक गंगोत्री क्यों कहा गया है?

उत्तर: जिस प्रकार गंगोत्री से गंगा नदी निकलती है, उसी प्रकार इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य का विचार और प्रेरणा प्रवाह शान्तिकुञ्ज से आरम्भ हुआ है। इस आश्रम को दिव्य साधनाओं और यज्ञों से पवित्र बनाया गया है। यहीं से युग परिवर्तन के लिए भागीरथी प्रयत्न हो रहे हैं, इसलिए इसकी तुलना गंगोत्री से की गई है, जहाँ से ज्ञान गंगा पूरे विश्व का कल्याण करने के लिए उतर रही है।

प्रश्न 2: युग-सन्धि महापुरश्चरण के अंतर्गत व्यस्त लोगों के लिए किस प्रतीक साधना का विधान है?

उत्तर: जो लोग व्यस्त हैं, उनके लिए एक पाँच मिनट की मानसिक ध्यान साधना बताई गई है। इसमें व्यक्ति को सुबह आँख खुलते ही ध्यान में हरिद्वार पहुँचना, गंगा में डुबकी लगाना, शान्तिकुञ्ज के गायत्री मंदिर और यज्ञशाला की परिक्रमा करना, अखण्ड दीपक के पास जप करना और गुरुदेव से शक्ति का अनुदान लेकर लौटना होता है। इस छोटी साधना से भी महापुरश्चरण में भागीदारी हो जाती है।

अध्याय 12: इस पूर्णाहुति के सत्परिणाम

प्रश्न 1: सन् 2001 में होने वाली महापुरश्चरण की पूर्णाहुति का क्या महत्व और परिणाम अपेक्षित है?

उत्तर: सन् 2001 में होने वाली इस पूर्णाहुति में एक करोड़ साधकों के भाग लेने की आशा है। जब इतने लोग एक लक्ष्य के लिए एकत्रित होते हैं, तो एक प्रचण्ड शक्ति उत्पन्न होती है। इस पूर्णाहुति का प्रभाव अगले सौ वर्षों तक रहेगा और यह युग परिवर्तन को एक सार्थक सच्चाई बनाएगी। इसमें से नवनिर्माण की अनेक धाराएँ फूटेंगी और समाज में सकारात्मक बदलाव आएँगे।

प्रश्न 2: एक लाख लोकसेवी तैयार करने का लक्ष्य कैसे पूरा किया जा सकता है?

उत्तर: यह लक्ष्य कठिन लगता है, पर यदि इसके लिए एक तूफानी आंदोलन खड़ा किया जाए तो यह संभव है।

जब लोग हजारी किसान जैसे व्यक्तियों को देखते हैं, जिन्होंने अकेले एक हजार आम के बाग लगवा दिए, तो वे भी प्रेरित होते हैं। यदि लोगों में सच्ची लगन हो और वे संकीर्ण स्वार्थ से ऊपर उठें, तो वे जनकल्याण के लिए समय और श्रम दान कर सकते हैं।

अध्याय 13: शिक्षण सत्र व्यवस्था

प्रश्न 1: शान्तिकुञ्ज में शिक्षण सत्रों की व्यवस्था क्यों और कैसे की गई है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज का मुख्य उद्देश्य युग शिल्पियों (कार्यकर्ताओं) का निर्माण करना है। कम समय में अधिक लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए छोटे-छोटे शिक्षण सत्र रखे गए हैं। विशेष योग्यता के लिए एक महीने के सत्र और व्यस्त लोगों के लिए नौ-नौ दिन के सत्र होते हैं, जो हर महीने नियमित रूप से चलते हैं। इच्छुक व्यक्ति पूर्व स्वीकृति लेकर इनमें शामिल हो सकते हैं।

प्रश्न 2: शिक्षण सत्रों में महिलाओं के शामिल होने के लिए क्या नियम हैं?

उत्तर: इन सत्रों में सुयोग्य महिलाओं को भी पुरुषों के समान शामिल होने की सुविधा है। हालाँकि, एक शर्त यह है कि उनकी गोद में पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चे नहीं होने चाहिए। यह नियम इसलिए है ताकि छोटे बच्चों के कारण शिक्षण व्यवस्था में कोई बाधा न आए और माँ के साथ-साथ अन्य शिक्षार्थियों का भी ध्यान न बँटे।

अध्याय 14: अपने समय का महान आन्दोलन—नारी जागरण

प्रश्न 1: नारी जागरण को अपने समय का महान आंदोलन क्यों कहा गया है?

उत्तर: युग संधि के वर्षों में नारी जागरण एक बड़े आंदोलन के रूप में उभर रहा है, क्योंकि यह हजारों वर्षों से चली आ रही कुरीतियों और असमानता को समाप्त करेगा। यह आंदोलन 'नर और नारी एक समान' के सनातन तथ्य को स्थापित करेगा। इसमें महिलाओं को शासकीय व्यवस्था से लेकर हर क्षेत्र में समान अधिकार और गौरव प्राप्त होगा, जो एक बहुत बड़ा सामाजिक परिवर्तन है।

प्रश्न 2: महिला आंदोलन के अंतर्गत कौन से दो प्रमुख कार्य हाथ में लिए जाएँगे?

उत्तर: महिला आंदोलन अगले दिनों में दो मुख्य कार्य करेगा:

1. शिक्षा और स्वावलंबन को प्रोत्साहन: महिलाओं को शिक्षित, सुयोग्य और आत्मनिर्भर बनाया जाएगा।
2. खर्चीली शादियों का असहयोग: समाज में बेटी-बेटे का अंतर पैदा करने वाली खर्चीली और दहेज वाली शादियों का महिलाएँ मिलकर विरोध करेंगी।

अध्याय 15: विचार क्रान्ति—जनमानस का परिष्कार

प्रश्न 1: आज की विचार क्रान्ति प्राचीन काल के परिवर्तनों से अधिक कठिन क्यों है?

उत्तर: प्राचीन काल में दुनिया की आबादी बहुत कम थी और केवल कुछ ही लोग गलत रास्ते पर थे। लेकिन आज दुनिया की आबादी ६०० करोड़ है और अधिकांश लोग विचार विकृति और आस्था संकट से ग्रस्त हैं। इतने बड़े जनमानस की सोच को बदलना एक बहुत बड़ा और कठिन कार्य है, जिसके लिए हजारों परशुराम भी कम पड़ेंगे।

प्रश्न 2: 'जनमानस का परिष्कार' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर: 'जनमानस का परिष्कार' का अर्थ है लोगों के मन में गहराई तक बैठ चुके गलत दृष्टिकोणों और आदतों

को पूरी तरह से बदलना। इसमें अवांछनीयताओं (बुरी प्रवृत्तियों) को समाप्त करना और सत्प्रवृत्तियों (अच्छी प्रवृत्तियों) को बढ़ावा देना शामिल है। यह धरती के एक छोर से दूसरे छोर तक किया जाने वाला एक व्यापक सुधार कार्य है।

अध्याय 16: सृजन प्रयोजनों के निमित्त समयदान

प्रश्न 1: शिक्षा के प्रसार के लिए क्या योजना बनाई गई है?

उत्तर: अशिक्षा को समाप्त करने के लिए यह योजना बनाई गई है कि हर शिक्षित व्यक्ति विद्या प्राप्ति के ऋण से मुक्त होने के लिए औसतन दस अशिक्षित लोगों को शिक्षित बनाने का संकल्प ले। यह आंदोलन बिना नए स्कूल खोले और बिना अधिक धन खर्च किए शिक्षा का प्रसार कर सकेगा, जिससे समाज में एक बड़ा सकारात्मक परिवर्तन आएगा।

प्रश्न 2: नवयुग के लिए नए साहित्य की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर: जब दो-तिहाई अशिक्षित जनता शिक्षित होगी, तो उनमें ज्ञान की भूख बढ़ेगी। यदि इस बौद्धिक भूख को सही युग साहित्य से शांत नहीं किया गया, तो वे गलत और विकृत साहित्य को अपना लेंगे, जो उनके लिए अशिक्षित रहने से भी अधिक हानिकारक होगा। इसलिए, आने वाले नए युग के मनुष्य के लिए हर भाषा में अभिनव साहित्य उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है।

अध्याय 17: दैवी सत्ता का सूत्र संचालन

प्रश्न 1: महान कार्य वास्तव में किसके द्वारा सम्पन्न होते हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, सभी महान कार्य महाकाल (दैवी सत्ता) की योजना के अनुसार ही सम्पन्न होते हैं। निराकार होने के कारण ईश्वर सीधे काम करते नहीं दिखते, बल्कि वे महान व्यक्तियों को माध्यम बनाते हैं। जैसे तेज तूफान के सहारे तिनके भी आकाश छू लेते हैं, वैसे ही दैवी सत्ता की सहायता से सामान्य व्यक्ति भी असाधारण कार्य कर जाते हैं और उसका श्रेय प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 2: मिशन के संस्थापक अपने कार्यों की सफलता का श्रेय किसे देते हैं?

उत्तर: मिशन के संस्थापक अपने 80 वर्ष के जीवन में हुए सभी क्रिया-कलापों, जैसे साहित्य सृजन, संगठन निर्माण और सृजनात्मक आंदोलनों की सफलता का प्रधान कारण **दैवी शक्ति की कृपा और अनुकूलता** को ही मानते हैं। उनका मानना है कि उनके सामान्य साधनों से इतना बड़ा कार्य संभव नहीं था; यह सब किसी कुशल बाजीगर (ईश्वर) के मार्गदर्शन से ही संभव हो पाया है।